22

ISSN : 0976-5778

वर्ष : 2018-19

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित

ईसुरी-22

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2019 अंक - 22 ISSN : 0976-5778

संरक्षक
प्रो. आर.पी. तिवारी
कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्नल आर.एम. जोशी
कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक
प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता
प्रो. निवेदिता मैत्रा
प्रो. चंदा बेन

प्रधान संपादक
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव
(सचिव, बुन्देली पीठ)

सहायक संपादक
विवेकानंद उपाध्याय, मनीष कुमार

प्रबंध संपादक
आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : डॉ मशकूर अहमद

संपादक मण्डल
डॉ. हिमांशु कुमार
डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. अफरोज बेगम
डॉ. सत्य प्रकाश उपाध्याय
श्री सतीष कुमार
श्री विवेक विसारिया

प्रकाशक
बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

बुन्देलखण्ड में सूर्य मन्दिरों की परम्परा

डॉ. मशकूर अहमद एवं डॉ. सीमा ममता कुजूर*

भारत में सूर्य पूजा का उद्भव -

सूर्य ब्रह्माण्ड की ऊर्जा का प्रमुख श्रोत है। सूर्य नवग्रह में प्रमुख ग्रह है। हिन्दू धर्म समाज में सूर्य पूजा ऋग्वैदिक काल से होती आ रही है। सूर्य का ऋग्वैदिक नाम 'सविता' भी है।[1] सूर्य का वैदिक देव मण्डल में प्रमुख स्थान था, किन्तु परवर्ती काल में विष्णु, शिव और शक्ति की तुलना में सूर्य का स्थान अपेक्षाकृत निम्न हो गया। 'सूर्य ऋग्वैदिक काल में सृष्टि के जंगम और स्थावर जीवों की आत्मा थे।'[2] सूर्य सात अश्वों के रथ पर सवार रहते थे।[3] वे जगत को प्रकाशित करते थे और उस युग में वे प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ रूप थे। कालान्तर में भारत में सूर्य पूजन प्रारम्भ हुआ। सूर्य पूजा विजातियों के प्रभाव के कारण प्रारम्भ हुयी।

'भारत में कुषाण युग में सूर्य प्रतिमायें निर्मित होना प्रारम्भ हो गयी थी।'[4] कुषाण काल में निर्मित एक प्रतिमा मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत है। सूर्य प्रतिमाओं का रूप, उनके आयुध, वेश-भूषा मध्य एशियायी है। सूर्य की प्रतिमा का रूप कुषाण राजाओं की तरह किया गया। उनकी प्रतिमायें कुषाण शासक होने का भ्रम उत्पन्न करती हैं। सूर्य प्रतिमा में वे कुषाण शासकों की तरह वेस्ट कोट (सटा-सलूका) पहले हुये हैं; उनके जूते घुटनों तक है अर्थात बूट पहने हुये, कमल पुष्प धारण किये हुये दर्शाये गये हैं। सूर्य मन्दिर, प्रतिमा एवं सूर्य पूजा का उल्लेख भविष्य पुराण में भी मिलता है। भविष्य पुराण के अनुसार 'कृष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने सिंध में चन्द्रभागा (चिनाब) नदी के तट पर सूर्य का प्रथम देवालय निर्मित कराया था। सूर्य की उस प्रतिमा की पूजा हेतु शकद्वीप पुरोहित (मग पुजारी) आमंत्रित किये थे।[5] मग पुजारी ईरान के निवासी थे। इन्हीं मग पुजारियों ने भारत में तत्कालीन समय में सूर्य उपासना का प्रचार किया। इस बात से यह विदित होता है कि भारत के पुजारी उस काल में सूर्य-पूजा के विधि-विधान से सम्भवतः अनभिज्ञ थे। इस प्रकार भारत में 'शाकलद्वीपी' ब्राह्मणों का अलग वर्ग बन गया था।[6]

चन्द्रभागा (चिनाव) नदी के तट पर सूर्य मन्दिर का उल्लेख युवानच्वांग ने भी किया है। उसके अनुसार सूर्य की यह प्रतिमा स्वर्ण निर्मित थी तथा अनेक बहुमूल्य रत्नों एवं पदार्थों से अलंकृत थी।[7] मग पुजारी एवं ज्योतिषी हर्ष के जन्म के समय भी आमंत्रित किये गये थे। इन ज्योतिषियों में 'तारक' नाम को भोजक (मग) ज्योतिषी भी थीं।[8] सूर्य पूजा के सम्बन्ध में वाराहमिहिर ने भी उल्लेख किया है। उसके अनुसार सूर्य पूजा हेतु मगों को ही पुजारी बनाया जाता था।[9] कालिदास के 'रघुवंश' महाकाव्य सूर्य के उपस्थापन का वर्णन है। रघुवंश में सूर्य के रथ के सात हरे अश्वों को उल्लेख है।[10]

*प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.)

सूर्योपासना के प्रमाण गुप्त काल में भी प्राप्त होते हैं। गुप्त शासक कुमार गुप्त के शासन काल में बाह्य देश से आये कपड़ा बनाने वाले एक संघ ने मंदसौर के पास दशपुर में एक सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। इस काल की अनेक सूर्य प्रतिमायें प्राप्त हुयी, जो मथुरा संग्रहालय, भारत कला भवन (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) में संग्रहीत है। यह शासक तोरमाण तथा मिहिरकुल सूर्य उपासक था। ज्ञात हो कि सागर के आद्यैतिहासिक नगर एरण पर हूण एवं उसका एक अभिलेख महावाराह प्रतिमा के वक्ष पर लिखा हुआ है। इस प्रकार धीरे-धीरे सूर्य पूजा एवं सौर सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार समस्त भारत में हुआ।

बुन्देलखण्ड के सूर्य मन्दिर -

अखण्ड भारत में प्रथम सूर्य मन्दिर एवं सूर्य प्रतिमा के निर्माण के साक्ष्य एवं अभिलेखीय प्रभाव चिनाव नदी तट से प्राप्त होते हैं। मुल्तान वर्तमान में पाकिस्तान का एक शहर है। मुल्तान के मन्दिर का उल्लेख भारतीय लेखकों ने ही नहीं अपितु अरबी एवं विदेशी लेखकों ने भी किया है।

अलबकनी, मसूदी, इस्तखरी, इब्ने हौकल आदि विदेशी लेखकों एवं इतिहासकारों ने मुल्तान के सूर्य मन्दिर का उल्लेख किया है। मुल्तान के सूर्य मन्दिर की सूर्य प्रतिमा के सम्बन्ध में अलबरूनी का कथन है कि 'सूर्य' की यह प्रतिमा सबसे प्रसिद्ध थी, जो आदित्य कहलाती थी और यह प्रतिमा लाल चमड़े से ढकी थी, इस प्रतिमा में दो लाल पभराग थे, यह प्रतिमा लकड़ी की थी।

सूर्य उपासना का प्रचार धीरे-धीरे समस्त भारत में हो गया। उड़ीसा के कोर्णाक का सूर्य मन्दिर विश्वविख्यात है। बुन्देलखण्ड में भी सूर्योपासना, सूर्य मन्दिर परम्परा थी। वर्तमान में बुन्देलखण्ड के चार सूर्य मन्दिरों की जानकारी स्पष्ट है। ये मन्दिर ग्राम रहिलिया-महोबा, उत्तरप्रदेश, सूर्य मन्दिर ऊमरी, जिला-टीकमगढ़ मध्यप्रदेश, सूर्य मन्दिर मड़खेरा- टीकमगढ़ तथा रहली, जिला-सागर म.प्र में है। सूर्य मन्दिरों एवं सूर्य पूजा परम्परा बुन्देलखण्ड में प्रचलित थी। बुन्देलखण्ड के अनेक स्थानों से सूर्य सहित नवग्रह की प्रतिमायें प्राप्त होती हैं।

सूर्य मन्दिर रहिलिया -

रहिलिया ग्राम जिला महोबा उत्तरप्रदेश में महोबा से छतरपुर जाने वाले मार्ग पर महोबा मुख्यालय से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस ग्राम को चन्देल शासक राहिल देव वर्मन ने बसाया था। राहिल देव वर्मन का शासन काल 875 ई. से 900ई. रहा। राहिल के नाम पर ही इस ग्राम का नाम रहिलिया पड़ा। इस ग्राम में एक विशाल सूर्य मन्दिर भग्नावस्था में है। मन्दिर के सम्मुख एक विशाल सरोवर का निर्माण कराया गया था जिसका नाम राहिल सागर है। राहिल सागर के पश्चिमी भाग में मन्दिर निर्मित है।[11]

रहिलिया का सूर्य मन्दिर नागर शैली में निर्मित है। इस मन्दिर का विन्यास तल छन्द योजना अन्तर्गत लगभग 4 फीट ऊँची जगती पर किया गया है। मन्दिर खुर, कुम्भ, कलश, कपोत पट्टिका के साथ अलंकृत अर्न्तपत्र सहित सप्तरथ शैली में है। ऊर्ध्वछन्द योजनानुसार जंघा भाग, शिखर, आमलक, कलश एवं बीजपूरक से युक्त ऊँचा शिखर विद्यमान था। मन्दिर की जगती तीन ओर से प्रवेश हेतु सोपान निर्मित हैं। मन्दिर में लघु मण्डप, मण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह दृष्टव्य है। गर्भगृह में सूर्य प्रतिमा नहीं है। गर्भगृह के ललाट बिम्ब की शिला के मध्य भाग में सात अश्वों के रथ पर आसीन सूर्य प्रतिमा अंकित है। गर्भ के द्वार स्तम्भों पर नीचे के भाग में मकर वाहिनी गंगा तथा कच्छप वाहिनी यमुना की सुन्दर प्रतिमा है। मन्दिर के भग्नावशेषों में अनेक देवी-देवताओं का सुन्दर अंकन प्राप्त होता है।

सूर्य मन्दिर रहली -

रहली सागर जिले का एक कस्बा है जो सागर मुख्यालय से लगभग 42 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। नगर में सुनार नदी के तट पर एक सूर्य मन्दिर का निर्माण चन्देल शासक राहिल देव वर्मन के शासन काल

875-900 या 910 ई. में कराया गया। रहली का सूर्य मंदिर भग्नावस्था में है इसका पुर्ननिर्माण बाद के काल में कराया गया। आज वर्तमान समय यह मन्दिर एक कक्ष के रूप में विद्यमान है। मन्दिर में 'सूर्य प्रतिमा स्थानक मुद्रा में स्थापित है।' सूर्य प्रतिमा के दोनों हाथों में सनाल कमल है। प्रतिमा को कंकण, केयूर, हार, कुण्डल, उपवीत एवं करधनी आदि धारण किये हुये निर्मित किया गया है।[15] सूर्य को लम्बे बूट पहने हुये दर्शाया गया है जो कुषाण कला का प्रभाव है। मन्दिर में अनेक प्राचीन प्रतिमायें स्थापित हैं परन्तु ये प्रतिमायें किसी अन्य मन्दिर की है। मन्दिर के पृष्ठ भाग पर नाग युग्म, उमा-महेश्वर, गणेश शिव, भैरव, आदि की हैं।

सूर्य प्रतिमा का माप- यह प्रतिमा पांच फीट तीन इंच ऊँची तथा दो फीट आठ इंच चौड़ी है। सूर्य मन्दिर रहली अब अपना वास्तविक स्वरूप खो चुका है परन्तु इस मन्दिर की बहुमूलय प्रतिमाओं के विशेष संरक्षण की आवश्यकता हैं

सूर्य मन्दिर मड़खेरा -

बुन्देलखण्ड का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर ग्राम मड़खेरा में स्थित है। ग्राम मड़खेरा मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में स्थित है। यह ग्राम टीकमगढ़ मुख्यालय से लगभग 18 कि.मी. दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित है। इस ग्राम में एक सूर्य मन्दिर है। सूर्य मन्दिर मड़खेरा का निर्माण काल 9वीं शताब्दी है। इस मन्दिर का निर्माण 9वीं ई. में प्रतिहार काल में हुआ था। प्रारंभिक चन्देल शासक गर्जुर-प्रतिहार शासकों के सामन्त थे। इस मन्दिर के सम्मुख एक प्राचीन कुआं है। मड़खेरा का सूर्य मन्दिर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुआ है। मन्दिर की सूर्य प्रतिमा भव्य है। प्रतिमा को अश्वरथ पर बैठे हुये अंकित किया गया है। प्रतिमा के दोनों हाथों में सनाल कमल है। मुख के पीछे प्रभामण्डल है। प्रतिमा मुकुट, ग्रेवेयक, हार, उपवीत, कुण्डल, कंकण आदि आभूषणों से सुसज्जित है। प्रभा मण्डल के दोनों ओर उड़ते हुये मालाधर हैं। प्रतिमा के दाहिने एवं बांये पार्श्व उनकी पत्नियाँ संध्या एवं छाया का परिचारिकाओं सहित अंकन है। मन्दिर नागर शैली में निर्मित है। लगभग 4 फीट ऊँची जगती पर स्थित है। निर्माण योजनानुसार कुम्भ, कलश, अर्न्तपत्र पर उच्छृत जंघा भाग आधारित शिखर है। शिखर पर आमलक, कलश एवं बीजपूरक स्थित था। वर्तमान समय में आमलक सुरक्षित है। कलश एवं बीजपूरक सिंह अज्ञात लोगों द्वारा गिरा दिया गया है। मन्दिर की जगती सोपानयुक्त है। मण्डप, अन्तराल तथा गर्भगृह की योजना का प्रावधान किया गया है। मण्डप के स्तम्भ अलंकृत है तथा छत पर कमलपत्रों से सज्जा की गयी है। मण्डप के उपरान्त अन्तराल है, अन्तराल के स्तम्भ भी अलंकृत है। अन्तराल के स्तम्भों पर गंगा यमुना का अंकन किया गया। गर्भगृह में एक शिला ऊँचे आधार पर भगवान सूर्य की प्रतिमा की स्थापना की गयी है। गर्भगृह का वितान भी कमलपत्रें से अलंकृत है। मन्दिर की रचना पंचरथ शैली में है।

सूर्य मन्दिर ऊमरी -

ऊमरी ग्राम टीकमगढ़ मुख्यालय से 80 किलोमीटर की दूरी पर ऊमरी ग्राम में भी एक सूर्य मन्दिर स्थित है। इस सूर्य मन्दिर का निर्माण काल भी 9वीं शताब्दी ई. में प्रतिहार शासकों के काल में हुआ। मन्दिर एक ऊँची जगती पर निर्मित नागर शैली एवं पंचरथ शैली में निर्मित इस सूर्य में दो अलंकृत स्तम्भों पर आधारित मण्डप, अन्तराल, गर्भगृह की योजना है। मन्दिर में खुर, कुम्भ, कलश, अर्न्तपत्र पर आधारित जंघा भाग तथा जंघा भाग पर उत्तरोत्तर संकीर्ण शिखर, शिखर पर आमलक, कलश, बीज पूरक युक्त है। मन्दिर अच्छी दशा में है। गर्भगृह में सूर्य प्रतिमा स्थापित है। सात अश्वों के रथ पर सूर्य को आरुढ़ दर्शाया गया है। प्रतिमा का मुख भाग तथा प्रभामण्डल नष्ट हो गया है। प्रतिमा के दोनों हाथों में सनाल कमल है। प्रतिमा का अभिनन्दन करते हुए प्रभामण्डल के समीप दो मालाधर अंकित है। मन्दिर पार्श्व में वराह, वायु एवं अनेक देवताओं की अलंकृत प्रतिमाओं का अंकन प्राप्त होते हैं। इस सूर्य मन्दिर के अतिरिक्त अनेक स्थानों यथा

एरण, देवरी अंचल से सूर्य सहित नवग्रह शिलाओं पर उत्कीर्ण प्राप्त होते है।

अतः कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड में सूर्य पूजा एवं सूर्य मन्दिरों की स्थापना प्राचीन है जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण 9वीं शताब्दी से प्राप्त होते हैं।

सन्दर्भ -

1. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द्र मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना, 2006, पृ. 755
2. ऋग्वेद -10.125, सूर्य आत्मा जगस्तस्थुपश्च।
3. ऋग्वेद -10.125, सूर्य आत्मा जगस्तस्थुपश्च।
4. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द्र मार्ग, राजेन्द्र नगर, पटना, 2006, पृ. 755
5. वही, 755
6. वही, 755
7. वाटर्स, टी. ऑन युवान च्वांग 'स ट्रेवल इन इण्डिया, जिल्द-2, लन्दन, 1904-5, पृ. 254
8. परब, काशीनाथ पाण्डुरंग, तुकाराम तात्या, ... दादाजी निर्णय, सागर प्रेस बम्बई, 1912, ... (त्रिकाल ज्ञान योजम्कतारको नाप गणक ... विज्ञापितवान।)
9. वृहत्संहिता, 60.19
10. कालिदास (अनु. राम प्रसाद सारस्वत), ... डिपो, मट्रिया कटरा, आगरा, वि.सं. 1992, ...
11. जिला गजेटियर, हमीरपुर, 1990, पृ.26
12. मजूमदार, आर.सी., ए.डी. पुसालकर, द हिस्ट्री ... कल्चर ऑफ द इण्डियन प्यूपल, जी एलन ... अनविन, लन्दन, 1951, पृ.82-83